UGC Approved Sr. No. 49366

SRJIS

ISSN -2278-8808

GLOBALLY INDEXED

IMPACT FACTOR SJIF 2016 6.177

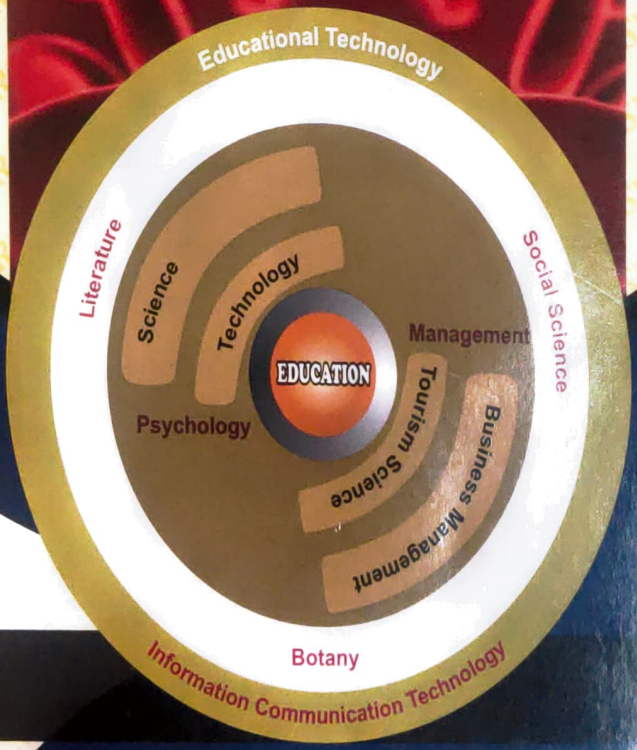

An International Peer Reviewed

Refereed Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

JAN - FEB , 2018. VOL. 5, ISSUE -46

EDITOR IN CHIEF : YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph.D.

IMPACT FACTOR SJIF 2016 = 6.177
ISSN 2278-8808

UGC SR. NO. 49366

AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, QUARTERLY

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

Special issue of

Mula Education Society's **Arts, Commerce & Science College, Sonai**

on

State Level Conference

on

"Employment Opportunities in Language and Literary Studies"

7th & 8th February, 2018,

PRINCIPAL & CHIEF CONVENER
Dr. Shankar L. Laware

CONFERENCE CONVENER
Dr. M.G.Varpe

COORDINATOR
Dr. S. P. Khedkar

EDITOR IN CHIEF
YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph. D.
Associate Professor, MAAER'S MIT School of Education & Research, Kothrud, Pune.

EDITOR'S

NISHIKANT JHA, Ph. D.
Thakur Art,Commerce & Science College
Kandiwali West,Thakur village, Mumbai

SHABIR AHEMAD BHATT, Ph. D.
Associate Professor, Department of Education, University of Kashmir, India

JACINTA A. OPARA, Ph. D.
Center for Environmental Education
Universidad Azteca, Chalco-Mexico

VAIBHAV G. JADAHV, Ph. D.
Assistant Professor, Department of Education & Extension, University of Pune.

Amitesh Publication & Company,
TCG's, SAI DATTA NIWAS, S. No. 5+4/ 5+4, D-WING, Flat No. 104, Dattnagar, Near Telco Colony, Ambegaon (Kh), Pune. Maharashtra. 411046. India. **Website: www.amiteshpublishers.com, www.srjis.com, Email: srjisarticles16@gmail.com**

HINDI PAPER

10	हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर *डॉ. अशोक द्रोपद गायकवाड*	33-37
11	हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर *डॉ. शरद भा. कोलते*	38-41
12	हिंदी भाशा और साहित्य में रोजगार के अवसर *डॉ. चौधारे एस. बी.*	42-46
13	हिंदी भाषा से रोजगार के अवसर *श्री. नानासाहेब रामदास चोरमले*	47-50
14	जनसंचार माध्यम और रोजगार *डॉ. संजय म. महेर*	51-53
15	सूचना प्रौदयागिकी और हिंदीं *डॉ. शेख एन. डी.*	54-56
16	हिंदी बाल कार्यकम और वर्तमान स्थिती *दहातोंडे अमोल मच्छिंद्र*	57-59
17	हिंदी भाषा और रोजगार की संभावनाएँ *प्रा. आदिनाथ शेषराव भाकड*	60-61
18	वंश्वीक परिदश्य मं हिंदी का स्थान *डां. अमानल्ला शेख*	62-63
19	भाषा के विद्यार्थियों के प्रति समाज का दृष्टिकोन और हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाएँ *प्रा. धनेश मच्छिंद्र माने*	64-68

हिंदी भाशा और साहित्य में रोजगार के अवसर

डॉ. चौधारे एस. बी.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई, तहसिल–नेवासा,अहमदनगर

सारांश
बाजारवाद के इस युग में सफलता का दारोमदार भाशा पर निर्भर करता है। भाशा की वास्तविक भाक्ति उसके शुद्ध प्रयोग में छिपी हुई होती है। भाशा भाब्दों के गहन अर्थों को समझाती है, वर्तनी के मानकीकरण पर चलते हुए विराम चिह्नों के उचित प्रयोग पर बल देती है। मात्र वर्तमान में भाशा का ज्ञान केवल आत्मउन्नति का साधन न रहकर बाजारवाद से जुड़ी Skill बन चुका है। इस निपुणता,कौ ाल्य को भाशा द्वारा ही जाना जा सकता है। अक्सर हिंदी या अन्य किसी भाशा विशय को लेकर स्नातक तथा स्नातकोत्तर ि क्षा पूर्ण करनेवाले हर अभ्यार्थी के मन में उठनेवाला अहम् सवाल यही होता है कि यह भाशा क्या उन्हें रोजगार देंगी ? हिंदी क्या उनके भरण–पोशण का साधन बन सकती है। क्या हिंदी जैसी भाशा से पेट भरा जा सकता है। भाशा से जुड़ा रोजगार का प्र न प्रतियोगिता परीक्षाओं के कारण ओर ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। केंद्र और राज्य सरकार की ओर से ली जा रही परीक्षाओं ने भाशा की व्यावहारिक उपादेयता पर प्र नचिह्न लगा दिए है। अतः सूचना–प्रौद्योगिकी के इस दौर में हिंदी की उपयुक्तता का मापन उससे जुड़े रोजगार के अवसरों से ही आंका जाएगा।

बीज भाब्दः *हिंदी भाशा , साहित्य, रोजगार, बाजारवाद*

पूर्ण आलेख

आज हिंदी चीनी भाशा के बाद दुनिया में बोली जाने वाली दुसरे क्रमांक की भाशा है। यह न सिर्फ बोलचाल, साहित्य, बाजार बल्कि रोजगार की भाशा बन चुकी है। भारत और भारत के बाहर क्रम ः 500 मिलियन तथा 900 मिलियन लोग हिंदी को समझते है। संस्कृत इसकी जननी है,इस दृश्टि से हिंदी की अपनी एक वि ाल परंपरा है। हिंदी में रोजगार के अवसरों को देखने के पहले हिंदी के विविध रूपों को देखना आव यक है। संविधान की धारा 343(1)के अनुसार हिंदी को राजभाशा का दर्जा प्राप्त हुआ। केंद्र सरकार से व्यवहार आदि के लिए हिंदी भाशा का प्रयोग संविधान सम्मत है।हिंदी वि वभाशा, माध्यम भाशा, संचार–सूचना प्रौद्योगिकी की भाशा बन रोजगार के रूप में अपनी जगह को मजबूत कर रही है।

भारत की सवा अरब की आबादी दुनिया की सबसे बडी बाजार व्यवस्था बन चुकी है। गत कुछ दिनों पर भारत में आयोजित वि व व्यापार मेले का आयोजन इसकी पुश्टि करता है। अतः संप्रेशण के रूप में हिंदी की सबलता और दे ाों–विदे ाों के व्यापार को जोडने वाले सेतू के रूप में हिंदी को देखा जाना नया नहीं है। भारतीय संस्कृति को जानने–पहचानने के लिए कई विदे ाी हिंदी की ओर आकर्शित हुए। भारतीय धर्म, संस्कृति,इतिहास से जुड़े तथ्यों की जानकारी हेतु अनेक दे ाों में तो हिंदी अध्ययन केंद्रों की स्थापना भी की गयी है।भूमंडलीकरण एवं निजी,गैरसरकारी उद्योगों के कारण बढ़ते व्यापारीकरण ने भारत की ओर अनेक दे ाों का ध्यान आकृश्ट किया है। इसी के चलते भारत में आनेवाली भाशागत दिक्कतों पर मात करना भी इन उद्योगों के लिए आव यक हुआ। हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता और सीखने में आसानी के

कारण बाहरी दे ों में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। अमेरिका की कुछ पाठ ालाओं में अब यह भी निर्णय लिया गया है कि हिंदी को विदे ी भाशाओं जैसे फ्रेंच,स्पॅनि ।,जर्मन के साथ रखा जाए। वि वस्तर पर भाशाओं के अखाड़े मे हिंदी ने अपना स्थान नि चत कर लिया है।

- **तंत्रज्ञान की भाशा हिंदी**

हिंदी या अन्य भारतीय भाशाओं में सही मायने में तंत्रज्ञान का समावे । *Technology Development in India Language (TDIL)*जो इलेक्ट्रॉनिक विभाग के अंतर्गत 1991 में बनाया गया, तब से हुआ। इस निर्दे ालय के द्वारा भारतीय भाशाओं को समृद्ध बनाने तथा संविधान मान्य 3 मिलियन भाब्दों को विकसित करने का बिड़ा उठाया। इसी अंतर्गत हिंदी के विकास हेतु आय.आय.टी. दिल्ली को सौंपा गया। इस हेतु 1981–90 के बीच प्रका ित पुस्तके,पत्रिकाएं,समाचारपत्र, सरकारी कागजाद को आधार बनाया गया। इन भाब्दों को छह मुख्य श्रेणियों में बांटा गया। जिसमें सामाजिक भास्त्र, भौतिक, व्यावसायिक या professional विज्ञान,सौंदर्यपरक एवं प्राकृतिक भास्त्र,वाणिज्य, कार्यालयीन और माध्यमों की भाशा और अनुवादित साहित्य आदि। लगभग तीस लाख भाब्द म ि ान के द्वारा पढ़े जाएंगे,ऐसा हिंदी भाशा का समूह संस्थाओं द्वारा बनाया गया। हिंदी भाब्द प्रोसेसर को विकसित किया गया है। जैसे–सिद्धार्थ,लिपि,ISM, Llep,leap office के साथ श्रीलिपि,सुलिपि,APS,अक्षर और अन्य।

लोकप्रियता और अंतर्राश्ट्रीय स्तर पर महत्व के कारण हिंदी में रोजगार के अवसर बढ़ते हुए देखे जा सकते है। केंद्र और राज्य सरकारों के अधीन विविध कार्यालयों, विभागों में तथा राश्ट्रीयकृत बँकों में होनेवाला कामकाज आमतौर पर हिंदी में ही होता है। हिंदी को प्राप्त संवैधानिक सम्मान अक्षुण्ण रखने वाले कई पदों हेतु मात्र हिंदी ही सहायता देंगी। इनमें हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, राजभाशा अधिकारी को उदा. के रूप में देखा जा सकता है।

आज लोकतंत्र का चौथा आधारस्तंभ मीडिया बन चुका है। चाहे कोई खबर पहूँचानी हो,सब्जी बेचनी हो या साबुन,भाशा के लिए पर्याय नहीं है। अतः मास मीडिया या जनमाध्यम अथवा मास कम्युनिके ान या जनसंचार में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अंतर्गत आनेवाले प्रिंट मीडिया या मुद्रित माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अनेक उपांगों में हिंदी भाशा–भाशी रोजगार पा सकते है।

प्रिंट मीडिया या मुद्रित माध्यम के अंतर्गत आनेवाले निम्न क्षेत्रों में हिंदी भाशी काम कर रहे है –

- **अखबार या पत्रकारिता का क्षेत्र** –इसके अंतर्गत विज्ञान, कला, ि ाक्षा, साहित्य, राजनीति, जनकल्याण, धर्म–द ान, संस्कृति, बालकों– महिलाओं के लिए पत्रकारिता। इन विशयों को लेकर स्तंभालेखन आदि।
- **पत्रिकाएँ** –दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक,मासिक,त्रैमासिक,अर्धवार्शिक,वार्शिक आदि पत्रिकाओं के संपादन एवं स्तंभालेखन आदि।

- **पुस्तकें** –साहित्यिक क्षेत्र में बुक रिव्ह्यू,समीक्षा तथा साहित्यिकों के साक्षात्कार आदि के संपादन हेतु। पुस्तकों की दुनिया में ***अनुवाद*** की अपनी अलग दुनिया है। अंतर्राश्ट्रीय स्तर पर हिंदी लेखकों का अपना महत्व है,जो अंग्रेजी या अन्य भाशाओं में अनुवाद करें। हिंदी में अनुवादित ऐसी कितनी ही प्रकाि ात कृतियां है,जो *Best Sellar* की श्रेणी में है।

अनुवाद के क्षेत्र में ऐसे कुछ व्यावसायिक संघ है,जो अनुबंध पर काम सौंपकर रोजगार उपलब्ध कराते है। ऐसे में व्यावसायिक लेखक के रूप हिंदी के छात्र रोजगार पा सकते है। विदे ाी कंपनी या एजन्सीयों के *Project* अनुवादित करने का काम,जो आंतरजाल या *internet* द्वारा भी संभव है।

भाशा से जुड़ी अनगिनत कंपनियाँ जिनमें *Systran,SDL international,Detroit Translation Bureou,Proz* आदि भाशा के लिए काम करनेवाली कई कंपनियाँ कई तरह के रोजगार दिलाती है,जिनमें हिंदी से संबंधित कामकाज प्रमुख है। अतः ऐसी कंपनियों से जुड़कर स्थायी या स्वतंत्र रूप से भी अनुवादक या दुभाशिया के रूप में काम पाया जा सकता है।

आज हम देखते है कि वि वस्तर के कई पब्लिके ान या प्रका ान संस्था हिंदी क्षेत्र में जगह बनाने के लिए संघर्शरत है।आ चर्य की बात है कि अनेक प्रमुख अंतर्राश्ट्रीय प्रका ान संस्था अपने व्यवसाय की भुरूवात हिंदी साहित्य से कर रहे है।

- **मुद्रण विभाग** –

संपादकीय कार्यान्वयन,व्यवस्थापन,कम्पोजर,मुद्रण म ीन,पैकिंग,मॅटर कंपोजिंग,प्रुफ रिडींग, छपाई, एजंट वितरण व्यवस्था आदि। यहाँ ओर एक बात महत्वपूर्ण है। *पत्रकारिता में पदवी या डिप्लोमा या जनसंवाद (Mass Communication) में भौक्षणिक अर्हता के साथ अच्छे रोजगार पाए जा सकते है।*

इलेक्टॉनिक **मीडिया** में भी हिंदी से संबंधित रोजगार के अवसरहै। इसके अंतर्गत –दृ□य **माध्यम** एवं **श्रव्य माध्यम** को लिया जा सकता है। दृ य माध्यम के अंतर्गत निम्न स्थानों पर हिंदी भाशा का ज्ञाता रोजगार प्राप्त कर सकता है। इनमें–

- **टेलिव्हिजन या दूरद□न से संबंधित रोजगार**–

इलेक्ट्रानिक माध्यम के अंतर्गत लगभग सभी के घरों में अपनी स्थिर जगह बना चुके टेलिव्हिजन का क्षेत्र सैकडों चैनल्स के रूप में विस्तृत हो चुका है। आज नृत्य, संगीत, पाककला, खेल, धर्म, बच्चों के चैनल, समाचार जैसे विशयों में इन चैनलों का वर्गीकरण देखा जा सकता है। इनमें वृत्त निवेदक, संवाददाता, प्रस्तुतकर्ता, अनुवादक ,कार्यक्रम निर्मिती एवं प्रसारण हेतु – निर्माता, निर्दे ाक, निर्माण सहायक, साम्रगी पर्यवेक्षक, संगीतकार, ध्वनि वि ोशज्ञ, डॉक्युमेंटी लेखक आदि क्षेत्रों में हिंदी भाशा और साहित्य को स्थान है।धारावाहिक या मौसम चर्चा में भी हिंदी छात्रों के लिए अवसर की संभावना है।हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यास, कहानियां, नाटकों पर कई दूरद ान धारावाहिक बनें है।

• **फिल्म**

भारतीय फिल्म उद्योग दुनिया का सबसे बडा उद्योग है, जिसमें हिंदी भाशा और साहित्य को देखते हुए कई रोजगार के कई अवसर उपलब्ध है, जैसे पटकथा लेखन, संवाद लेखन, गीत, संगीत, समीक्षा आदि। आज हिंदी साहित्य पर आधारित कई फिल्मों को प्रसिद्धी के ि ाखर चूमते हुए देखा जा सकता है। जिसमें उदाहरण स्वरूप वर्तमान विवादित फिल्म पद्मावत को देखा जा सकता है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार 1955–98 तक भारत में 236000 फिल्में बनी। जिनमें लगभग 32000 केवल हिंदी फिल्में थी। इसके अलावा एनिमेंटेड या बच्चों के लिए कार्टुन फिल्में या अन्य भाशा से हिंदी में अनुवादित फिल्मों तथा वीडियों के लिए भारत में बहुत बड़ा द ाक वर्ग है। इसमें फिल्म डबिंग उद्योग ने भी अच्छा–खासा रोजगार दिया है। डॉक्युमेंट्री फिल्में, जिनमें प्रांतीय भाशा और साहित्य ने भी धूम मचा दी है।

हिंदी के साथ खेल–कूद के समाचार की कॉमेन्टी, प्रबोधनात्मक कार्यक्रम – जैसे योगा या प्रवचन, नाटक, कॉमेडी भाो, रियालटी भाो, संगीत प्रतियोगिता,कैसेट–सी डी कल्चर में रोजगार के अवसर सहजता से प्राप्त हो सकते है।

श्रव्य माध्यम जिसमें प्रमुखतः आका ावाणी का नाम लिया जा सकता है, के साथ एफ. एम. चैनल ने भी हिंदी भाशा के साथ उसके साहित्य को पुर्नजीवित किया है। आज इनपर कई साहित्य रचनाएं धारावाहिक के रूप में प्रसारित की जा रही है। भाब्दों के स्पश्ट उच्चारण और आवाज की जादू पर चलने वाला यह उद्योग पचास बिलियन तक पहुंच गया है। इसके अंतर्गत आनेवाले कई क्षेत्रों में हिंदी भाशी काम कर रहे है – रेडिओ – आका ावाणी पर समाचार वाचक, संवाददाता, संवाद, लेखक, उपसंपादक सहायक समाचार संपादक, उद्घोशक, प्रोग्राम एग्जीक्यूटीव,निवेदिका–निवेदक, समाचार डायरी, कृशि समाचार, लोकसंगीत, नाटक, काव्यपाठ, गाना, भजन, भाोध–समीक्षा, भाास्त्रीय संगीत, पा चात्य संगीत, फिल्म, खेल–कूद, वनसंपदा, वार्ता आदि।

सूचना–तंत्रज्ञान के इस युग में सरकारी या गैरसरकारी टी.व्ही. तथा रेडियो चैनल की बाढ़–सी आ गयी है। अतः उतने ही ज्यादा रोजगार के अवसर सामने आ रहे है।

विज्ञापनों का संसार – रोजगार का आधार

यह युग विज्ञापन का है। अतः विज्ञापन की इस दुनिया में हिंदी के लिए कई अवसर है। इनमें– प्रेस विज्ञापन – समाचार पत्र,पत्रिकाएं, मनोरंजन विज्ञापन – आका ावाणी,दूरद ान,प्रद ानी, प्रत्यक्ष विज्ञापन – पत्रादे ा,पेंफलेट,ब्रो ार,सूचीपत्र बाहय विज्ञापन – पोस्टर,होर्डिग,दीवार लेखन,बस पोस्टर,विद्युत साईन बोर्ड आदि। इन विज्ञापनों हेतु प्रबंधक,सहायक प्रबंधक,प्रबंधक,विज्ञापन वि ोशज्ञ, प्रचार–प्रसार प्रबंधक,सहायक प्रबंधक, वितरण निरीक्षक आदि पदों के लिए हिंदी का ज्ञान आव यक है। इनके अलावा– खेल–कूद संबंधी विज्ञापन, ि ाक्षा संबंधी विज्ञापन, कृशि संबंधी विज्ञापन, ज्योतिश संबंधी विज्ञापन, मनोरंजन संबंधी विज्ञापन, फै ान संबंधी विज्ञापन, आंतरिक गृहसज्जा संबंधी विज्ञापन आदि।

- **कम्प्युटर की दुनिया में रोजगार**

आज मोबाइल और कम्प्युटर के लिए गेम डिजाईनिंग, गेम डेवलेपमेंट में रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हो रहे है। जिसके लिए कल्पकता की अधिक आव यकता है। अमेरिकी वैज्ञानिक रिक ब्रिग्ज ने हिंदी को कम्प्युटर की द ृष्टि से श्रेश्ठ माना। हिंदी में सुविधा लाने के लिए डाटा बाईट,सीएमसी,एच सी एल कंपनियाँ कार्यरत है। सुपर कम्प्युटर के निर्माता सीडेक पुणे ने हिंदी सीखने के लिए 'लीला' यह बहुआयामी सॉफ्टवेअर पॅकेज विकसित किया। अतः हिंदी से संबंधित रोजगार के अवसर कम्प्युटर के क्षेत्र में भी उपलब्ध हुए है। इसके अंतर्गत –डी टी पी ऑपरेटर, वेब डिजाइनिंग, ई–बुक, ई–जर्नल, ई–समाचार पत्र, ई–मेंगजिन्स, आंतरजाल या नेट पर ब्लॉग चलाकर भी स्वतंत्र रूप से पैसा कमाया जा सकता है।अपने दे ा की विभिन्न जानकारी इंटरनेट पर हिंदी में उपलब्ध करवाना सरल रोजगार है।इसी का ओर एक विकसित रूप ब्लॉगिग में देखा जा सकता है। जिसमें साहित्य पर आधारित ऑडिओ या वीडियो, समीक्षा, इतना ही नहीं भौक्षणिक साहित्य–संसाधनों को भी स्थान दिया गया है।

इसके अलावा विदे ाी दूतावासों के भारत स्थित सूचना केंद्र,पर्यटन,व्यापार,होटेल आदि स्थानों पर भी हिंदी के छात्र अपना कौ ाल्य दिख सकते है। वैि वक स्तर 73 दे ाों में 150 वि वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन–अध्यापन एवं अनुसंधान की सुविधा उपलब्ध है। फिजी,सुरीनाम,गुयाना,मॉरि ास दे ाों में हिंदी का प्रचलन अधिक है। अतः विदे ाी वि वविद्यायलों में अध्ययन–अध्यापन हेतु तथा परंपरागत रूप में भारत के ही किसी भी प्रांत,राज्य के विद्यालय, महाविद्यालय, वि वविद्यालय में अध्यापक बन हिंदी अध्ययन–अध्यापन का कार्य हिंदी भाशा–भाशी कर सकते है।

इस तरह देखा जाए जो हिंदी में रोजगार प्राप्त करने की कई संभावनाएं है। जिसके लिए आव यकता है केवल धैर्य एवं हिंदी भाशा पर वि वास की।